<u>पाठ-34</u>

स्वर्गारोहण

प्रेरितों 1:1-11

पुनरुत्थान के चालीस दिन बाद, यीशु स्वर्ग में चढ़ गए और शिष्यों ने उन्हें जाते हुए देखा। लूका में यह दृश्य दर्ज किया गया है जब यीशु ने अपने शिष्यों को अलविदा कहा: "तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी; और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। तब वे उसको दण्डवत् करके *बड़े आनन्द* से यरूशलेम को लौट गए" (लूका 24:50-52,)। परन्तु वे "बड़े आनन्द "से क्यों लौटे ?

अलविदा कहना कभी आसान नहीं होता। पादरी कहते हैं कि उन्हें आज भी वो संघर्ष याद है जब उन्होंने लन्दन हवाई अड्डे पर अपने माता-पिता को अलविदा कहा था। वे अच्छी तरह से तैयार थे, और हर कोई इस बात पर सहमत था कि उनका लन्दन से अमेरिका जाना सही कदम था। परन्तु वे अपना गृह देश छोड़ रहे थे, और अलविदा कहने के लिए आप चाहे कितनी भी अच्छी तरह से तैयार हों, जब वह क्षण आता है तो यह कभी भी आसान नहीं होता है।

अगर हमारे विमान के रवाना होने पर हमारे परिवार और दोस्तों ने एक दावत रखी होती, तो उन्हें वह अजीब लगता। तो जब यीशु उन्हें छोड़ कर गए तो शिष्यों की इस खुशी का हम क्या मतलब निकाले?

शिष्यों की खुशी तब और भी अजीब हो जाती है जब हम याद करते हैं कि वे कितने भयभीत थे जब यीशु ने अंतिम भोज के दौरान अपने जाने की बात कही थी। अवश्य ही कुछ ऐसा हुआ होगा कि जिस बात से वे पहले डरे हुए थे, वह अब उत्सव का कारण बन गया था। इस पाठ में हमारा उद्देश्य यह जानना है कि वह कारण क्या था।

बादल में उठा लिया गया

लूका में दर्ज किया गया है कि जब यीशु "ऊपर उठा लिया गया... और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया" (प्रेरितों 1:9)। जब लूका हमें बादल के बारे में बताते हैं, तो वह यरूशलेम में मौसम की स्थिति पर संवाद

नहीं कर रहे हैं! जब परमेश्वर के लोग रेगिस्तान में थे, तो परमेश्वर ने उन्हें स्वयं को बादल के खम्भे में प्रकट किया था। इसी तरह, सुलैमान के समय में, परमेश्वर की उपस्थिति का बादल नीचे आया और मंदिर में भर गया (1 राजा 8:10-13)। जब शिष्यों ने रूपान्तरण में यीशु की महिमा देखी, तो उन्होंने बादल में से परमेश्वर की आवाज़ सुनी: "यह मेरा प्रिय पुत्र है; उसकी सुनो" (मरकुस 9:7)।

अब लूका हमें बताते हैं: "यह कहकर वह उन के देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया" (प्रेरितों 1:9)। क्या इससे अधिक स्पष्ट कुछ और हो सकता है? यीशु पिता के पास से आये थे, और अब, अपना कार्य समाप्त करके, वह स्वर्ग में अपने पिता के पास लौट रहे थे।

आदम को बगीचे से निकाल दिया गया, और उसके सभी बच्चों को परमेश्वर से अलग कर दिया गया। परन्तु मसीह का स्वर्ग में स्वागत किया गया, और उनके सभी बच्चों का परमेश्वर से मेल कराया जाएगा। पहले आदम ने हम सबको बाहर निकाला। अंतिम आदम हम सभी को अंदर ले जाता है। इसलिए शिष्य खुशी के साथ यरूशलेम वापस लौटे।

स्वर्ग में एक वकील

जब मसीह स्वर्ग में चढ़े, तो शिष्यों को पता था कि वह ठीक वहीं हैं जहाँ उन्हें उनकी आवश्यकता थी।

मान लीजिए कि आप किसी ऐसे आरोप के कारण जेल में हैं जिसमें दोषी पाए जाने पर मौत की सजा का प्रावधान है। आपको एक अच्छे वकील की ज़रूरत है, जो सबसे अच्छा हो।

आपको एक अच्छा वकील मिल जाता है, और जैसे-जैसे आप उसे जानते हैं, आपको पता चलता है कि वह न केवल एक कुशल वकील है, बल्कि बहुत दयालु व्यक्ति भी है। आपके जेल में उनकी मुलाकात से आपको बहुत आराम मिलता है, और जैसे-जैसे आप संबंध बनाते हैं, तो आप को पता चलता है कि आप उनसे अपने जीवन की कठिनाइयों के बारे में भी बात कर सकते हैं।

यह बहुत मूल्यवान है, परन्तु आपको अपने वकील से जिस चीज़ की सबसे अधिक आवश्यकता है वह जेल में उस आराम कि नहीं है। आपको यह चाहिए कि वह अदालत में आपका बचाव कर सके।

पापियों के रूप में हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत पृथ्वी पर आराम नहीं, बल्कि स्वर्ग में सुरक्षा है। हमें एक वकील की आवश्यकता है जो हमारे मामले की पैरवी करेगा, और "पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात् धर्मी

यीशु मसीह" (1 यूहन्ना 2:1)।

दोषारोपक

कल्पना कीजिए कि आप स्वर्ग के कठघरे में खड़े हैं।[1] शैतान, जो आपका दोषारोपक है, उसके पास आपके खिलाफ पेश करने के लिए मुकदमा है। अदालत कक्ष स्वर्गदूतों से भरा हुआ है, जो जैसे ही परमेश्वर न्यायाधीश के रूप में अपना स्थान लेते हैं वैसे ही उठ खड़े होते हैं। आपका दोषारोपक अपने कागजात लेता है और अपना मुकदमा प्रस्तुत करते समय अदालत के चारों ओर घूमना शुरू कर देता है। इसका सारांश यह है कि आप पाप के दोषी हैं और आपकी निंदा की जानी चाहिए।

वह यह कहकर आरंभ करता है कि आप पाप में पैदा हुए हैं और आपका स्वभाव भ्रष्ट है। फिर वह आप पर उन विशेष पापों का आरोप लगाने लगता है जो आपने युवावस्ता में किये थे। वह आपके जीवन की कहानी का अनुसरण आपकी कायरता, शालीनता, घमंड, क्षुद्रता और लालच के क्षणों की पहचान करते हुए करता है। जब आप सुनते हैं तो आप शर्मिंदगी की भावना से अभिभूत होकर घबरा जाते हैं।

अंत में, आपका दोषारोपक यह कहकर अपने तर्क को पुख्ता करता है कि भले ही आपने मसीह में विश्वास करने का दावा किया था, आपका विश्वास अक्सर कमजोर था, और आपके मन में कई संदेह थे। उसका मुकदमा बाध्यकारी है, और आपको डर है कि आपकी निंदा की जाएगी।

तब यीशु आगे बढ़ते हैं। वे अपना संक्षेप लेते हुए आपकी सुरक्षा के लिए तर्क देना शुरू कर देते हैं। "मेरा मुवक्किल मानता है कि दोषारोपक पक्ष द्वारा बोला गया हर शब्द सच है। हम किसी भी आरोप का विरोध नहीं करते हैं, न ही हम किसी कम करने वाली परिस्थिति का दावा करते हैं। जैसा कि आरोप लगाया गया है, मेरा मुवक्किल दोषी है।"

परन्तु, जैसे ही वे अपने कीलों से जख्मी हाथों को उठाते हैं, वे कहते हैं, "मैंने यहाँ अपने खून से खरीदा हुआ पूर्ण क्षमादान पाया है।"

दोषारोपक के पास इसका कोई जवाब नहीं होता है। आपके विरुद्ध उसका पूरा मुकदमा ध्वस्त हो जाता है और उसे अदालत से बाहर कर दिया जाता है। हमारा बचाव यह है कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मरे। उन्हें पहले ही क्रूस पर न्याय दिया जा चुका है, और एक बार आरोप का निपटारा हो जाने के बाद, इसे दोबारा नहीं लाया जा सकता है। "फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी

भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिये निवेदन भी करता है” (रोमियों 8:34)।

यीशु का निरंतर कार्य

जिसने भी किसी प्रियजन को मृत्यु के द्वारा खोया है वह जानता है कि अंतिम छापें एक शक्तिशाली प्रभाव डालती हैं। हम लोगों को वैसे ही याद करते हैं जैसे हमने उन्हें आखिरी बार देखा था। शिष्यों को यीशु की आखिरी वह झलक याद है जब उनके हाथ उन्हें आशीर्वाद देने के लिए उठे हुए थे: "और उन्हें आशीष देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया” (लूका 24:51)।

स्वर्गारोहण हमें यीशु के पूर्ण किये गये कार्य और निरंतर कार्य के बारे में बताता है। उन्होंने स्वयं को हमारे पापों के बलिदान के रूप में अर्पित करने का कार्य पूरा किया। अब कोई बलिदान देने की आवश्यकता नहीं है, कोई प्रायश्चित करने की आवश्यकता नहीं है, परमेश्वर के क्रोध को शांत करने और उनके लोगों को क्षमा देने के लिए और कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है। वह काम समाप्त हो गया है। यह पूरा हुआ!

परन्तु यीशु के पास निरंतर कार्य भी है। जैसा कि वें पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान हैं, वे उस कार्य को जारी रखते हैं जो वे तब कर रहे थे जब उन्हें अपने लोगों पर अपना आशीर्वाद बरसाते हुए उठा लिया गया था। "वह उनके लिये विनती करने को सर्वदा जीवित है” (इब्रानियों 7:25), और यह कार्य उनके लौटने तक चलता रहेगा।

उनकी उपस्थिति का वादा

यीशु स्वर्ग में चढ़ गये, परन्तु पवित्र आत्मा के माध्यम से वे अभी भी अपने शिष्यों के साथ थे। मसीह इसी बात का जिक्र कर रहे थे जब उन्होंने कहा, ”तौभी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा; परन्तु यदि मैं जाऊँगा, तो उसे तुम्हारे पास भेजूँगा” (यूहन्ना 16:7; प्रेरितों 1:4-5 भी देखें)।

हमारे प्रभु यीशु मसीह पिता के दाहिने हाथ विराजमान हैं, और साथ ही, वें पवित्र आत्मा द्वारा विश्वासियों के दिलों में भी मौजूद हैं। परमेश्वर के पुत्र हमारे लिए पिता का प्रतिनिधित्व करते हैं, और परमेश्वर की आत्मा हमारे लिए पिता और पुत्र का प्रतिनिधित्व करता है।

हालाँकि हमने यीशु को कभी नहीं देखा है, पवित्र आत्मा के माध्यम से हमारे साथ उनकी उपस्थिति उतनी ही

वास्तविक है जितनी तब थी जब वें शिष्यों के साथ चले थे। मसीह हमें "जाओ… और चेला बनाओ" के लिए बुलाते हैं (मत्ती 28:19)। हमें "पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे" बनना है (प्रेरितों 1:8)। और जैसे ही हम उनके नाम पर चलते हैं, यीशु कहते हैं, "मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ" (मत्ती 28:20)।

उनकी वापसी का वादा

जब यीशु का स्वर्गारोहण हुआ, तो दो देवदूत प्रकट हुए और उन्होंने शिष्यों से कहा, "हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा" (प्रेरितों 1:11)।

परमेश्वर ने वादा किया है कि जैसे यीशु को बादल पर उठा लिया गया था, जब वे वापस आएंगे, तो हम बादलों में उनसे मिलने के लिए उठा लिये जाएँगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:17)। अपने स्वर्गारोहण में यीशु के साथ जो हुआ वह हमारे साथ तब होगा जब वे महिमा में आएंगे।

ईसाई अभी भी उस महान दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब ईसा मसीह दोबारा आएंगे। प्रत्येक ईसाई उस दिन का हिस्सा होगा, जिसमें वे भी शामिल होंगे जो पहले ही मर चुके हैं। जो लोग पहले से ही प्रभु के साथ हैं और जो उनके आने पर जीवित हैं वे सदा सर्वदा के लिए प्रभु के साथ होंगे।

एक विश्वासी के रूप में, आपको आज यह जानकर बहुत खुशी हो सकती है कि आपका स्वर्गारोहण परमेश्वर, पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान है और उनके हाथ आपके ऊपर आशीर्वाद देने के लिए उठे हुए हैं। पवित्र आत्मा के माध्यम से, उनकी उपस्थिति हमेशा आपके साथ रहती है, आपको वह सब करने के लिए सशक्त बनाती है जो आपको करने के लिए आपको बुलाया गया है। और जब वे दोबारा आएंगे, तो आपको सदा सर्वदा के लिए अपनी उपस्थिति में ले जाएँगे।

नोट:

1. सी.एच. स्पर्जन से अनुकूलित, यीशु के अनुग्रहकारी होंठ (धार्मिक प्रवचन #3081), 1908।

प्रशन

परमेश्वर के वचन के साथ आगे जुड़ने के लिए इन प्रश्नों का उपयोग करें। उन पर किसी अन्य व्यक्ति के

साथ चर्चा करें या उन्हें व्यक्तिगत प्रतिबिंब प्रश्नों के रूप में उपयोग करें।

1. **आपने कब किसी कठिन “अलविदा” का सामना किया है? किस बात ने इसे इतना कठिन बना दिया?**

2. **जब यीशु उनके पास से चले गए तो चेलों को खुशी क्यों हुई?**

3. **इस कथन का उत्तर दें: ”पापियों के रूप में हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत पृथ्वी पर आराम नहीं, बल्कि स्वर्ग में सुरक्षा है।”**

4. **जैसे ही आप स्वर्ग की अदालत में खड़े होने के बारे में सोचते हैं, आपका बचाव क्या होगा?**

5. **यीशु का स्वर्गारोहण किस ओर संकेत करता है?**